Department of Prakrit and Sanskrit
Jain Vishva Bharati institute, ladnun

विश्रुत संस्कृतं पाठ्यक्रम

(Sixth Month Online Certificate Programme in Sanskrit Studies)

Syllabus

पाठ्यक्रम परिचय:

'संस्कृत अध्ययन' में डिप्लोमा एक वर्षीय कार्यक्रम है (सामान्यतः दो सेमेस्टर), जो संस्कृत भाषा, व्याकरण तथा साहित्य में आधारभूत प्रवीणता प्रदान करने पर केन्द्रित है। यह पाठ्यक्रम जैन विश्व भारती संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा संचालित किया जाता है।

'संस्कृत अध्ययन' में डिप्लोमा नामक इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की मूलभूत संरचना तथा विभिन्न ग्रंथों के चयनित अंशों के अध्ययन से परिचित कराना है। यह पाठ्यक्रम प्राचीन आचार्यों द्वारा समय-समय पर रचित संस्कृत साहित्य की अमूल्य धरोहर को दिशेष रूप से उजागर करता है

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राचीन भारतीय ज्ञान) परम्परा-Ancient Indian Knowledge Systems) का ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा संस्कृत भाषा एवं साहित्य की विभिन्न अवधारणाओं एवं विचारों से परिचित होंगे। विद्यार्थी दोनों सेमेस्टरों में विभिन्न मॉड्यूल्स का अध्ययन करेंगे।

मुख्य विशेषताएँ:

- यह पाठ्यक्रम नियमित रूप से ऑनलाइन माध्यम से होगा।
- कक्षाएं Zoom app पर या Google Meet app पर आयोजित की जाएगी।
- अवधि :1 वर्ष (2 सेमेस्टर, जुलाई से नवम्बर तथा जनवरी से मई)।
- सीटें उपलब्धता के अनुसार।
- योग्यता किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड विश्वविद्यालय से किसी भी विषय में/10+2 अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण।
- एक वर्षीया डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुल्क : ₹3000/- (प्रवेश एवं परीक्षा शुल्क दोनों सेमेस्टर हेतु)।
- 6 माही पाठ्यक्रम शुल्क : ₹2000/- (प्रवेश एवं परीक्षा शुल्क)।
- शिक्षण पद्धति ऑनलाइन मोड़।
- शिक्षण का माध्यम संस्कृत और हिंदी रहेगा।
- पाठ्यक्रम प्रणाली) चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्ट : CBCS)।
  (8 पत्र – 32 क्रेडिट)
- सेमेस्टर प्रथम के पेपर DSKT 103 में तथा द्वितीय सेमेस्टर के पेपर DSKT 201 में विकल्प है।
- 6 माही प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम के लिए प्रथम सेमेस्टर का पाठ्यक्रम पठनीय होगा

अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र:

संस्कृत अध्ययन में डिप्लोमा निम्नलिखित विषय क्षेत्रों में विशेषज्ञता विकसित करने पर केन्द्रित है—

- संस्कृत व्याकरण (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक)
- व्यवहारिक संस्कृत (Communicative Sanskrit)

- संस्कृत एवं जैन साहित्य
- संस्कृत काव्यशास्त्र
- धर्म एवं दर्शन
- अनुवाद एवं सृजनात्मक लेखन

मूल्यांकन प्रणाली:

- परीक्षा पद्धति: ऑनलाइन माध्यम
- परीक्षा लिखित :– 70 अंक
- सतत आन्तरिक मूल्यांकन (CIA) : 30 अंक
- **असाइनमेंट लिखित :**
- **Class Test ऑनलाइन : (प्रवेश के दो माह बाद)**
- **सेमिनार एवं समूह चर्चा : ऑनलाइन :**
- **उपस्थिति ऑनलाइन :**

क्रेडिट संरचना (CBCS Pattern)

सेमेस्टर	पेपर	क्रेडिट
Semester I	4 Papers	4 × 4 = 16
Semester II	4 Papers	4 × 4 = 16
Total	8 Papers	**32 Credits**

- **1 पेपर = 4 क्रेडिट**
- **1 क्रेडिट = 15 घंटे शिक्षण**

Programme Outcomes (POs)

इस कार्यक्रम के सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर विद्यार्थी—

PO1: विषय का मूलभूत एवं संरचनात्मक ज्ञान

PO2: विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक क्षमता

PO3: अनुप्रयोग एवं व्यवहारिक कौशल

PO4: संप्रेषण एवं अभिव्यक्ति कौशल

PO5: भारतीय ज्ञान परम्परा की समझ

PO6: नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यबोध

PO7: रचनात्मकता एवं साहित्यिक अभिरुचि

PO8: अन्तरविषयी एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण

PO9: जीवनोपयोगी कौशल एवं व्यक्तित्व विकास

PO10: सांस्कृतिक एवं सामाजिक संवेदनशीलता

Programme Specific Outcomes (PSOs)

इस कार्यक्रम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी—

PSO1: संस्कृत व्याकरण में प्रावीण्य

PSO2: संस्कृत व्यवहार एवं भाषा कौशल

PSO3: जैन साहित्य एवं काव्य का ज्ञान

PSO4: दार्शनिक एवं तुलनात्मक अध्ययन क्षमता

PSO5: संस्कृत रचनात्मक लेखन कौशल

PSO6: काव्यशास्त्रीय एवं सौन्दर्यबोध

PSO7: नैतिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यबोध

PSO8: ग्रंथअध्ययन एवं व्याख्यात्मक कौशल-

Semester- I

DSKT 101 : संस्कृत व्याकरण ज्ञान

Credits: 4 | Max Marks: 100 (70+30)

Objectives (उद्देश्य)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन का उद्देश्य है कि विद्यार्थी—

1. संस्कृत भाषा के मूलभूत व्याकरणिक तत्त्वों का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करें।
2. **सन्धिविचार-** (स्वर, व्यंजन विसर्ग एवं अयादी सन्धि के नियमों को समझाना एवं उनका पप्रयोग करना)
3. **समासप्रक्रिया-** के विभिन्न प्रकारों अव्ययीभाव), तत्पुरुष, बहुव्रीहि आदिका ज्ञान प्राप्त करें ।
4. विभक्तियों एवं **कारकप्रयोगों-** का शुद्ध एवं सटीक प्रयोग सीखें।
5. संस्कृत भाषा की शुद्धता, संरचना एवं अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करें।
6. पारंपरिक व्याकरणिक ज्ञान को व्यावहारिक प्रयोग से जोड़ने में सक्षम बनें।

Course Outcomes (अधिगम परिणाम)

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी—

1. **सन्धि** के विभिन्न प्रकारों स्वर), व्यञ्जन, विसर्गविच्छेद करने में सक्षम होंगे।/की पहचान एवं सही निर्माण
2. दिए गए शब्दोंवाक्यों में/ **समास** का प्रकार पहचान सकेंगे तथा समास।कर सकेंगे। विग्रह
3. विभिन्न प्रत्ययों **(क्त्वा, तुमुन्, ल्यप्, शतृ, शानच् आदि)** का प्रयोग कर नए शब्द बना सकेंगे।
4. **कृत् एवं स्त्रीप्रत्ययों** के आधार पर शब्दरचना की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से समझ पाएंगे।

5. वाक्यों में **विभक्ति एवं कारकों** का शुद्ध एवं प्रसंगानुकूल प्रयोग कर सकेंगे।
6. संस्कृत वाक्यों का व्याकरणिक विश्लेषण) Grammatical Analysis) करने में दक्ष होंगे।
7. शुद्ध, सरल एवं प्रभावी संस्कृत लेखन एवं अनुवाद करने की क्षमता विकसित होगी।
8. पारंपरिक ग्रंथों के सरल अंशों को व्याकरणिक दृष्टि से समझने में सक्षम होंगे।

UNIT-1 : **स्वरसन्धि** (यण्, गुण, वृद्धि, दीर्घ, पूर्वरूप, पररूप)

व्यञ्जनसन्धि (जश्त्व, श्चुत्व, चर्त्व, ष्टुत्व, छत्व, परसवर्ण, अनुस्वार)

विसर्गसन्धि (उत्व, रुत्व, सत्व, षत्व, विसर्ग का लोप)

अयादी सन्धि

UNIT-2 : **समास** (अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधाराय, द्विगु, द्वन्द्व, बहुव्रीहि)

UNIT-3 : पूर्वकालिक क्रियार्थक प्रत्यय(क्त्वा, तुमुन्, ल्यप्), क्रियार्थक कृत्प्रत्यय,क्तवतु), सातत्यबोधक प्रत्यय (शतृ, शानच्), स्त्री प्रत्यय (टाप्, ङीप्)

UNIT-4 :विभक्ति ज्ञान एवं कारकों के विशिष्ट प्रयोग

पाठ्य पुस्तकें-

१. संस्कृत वाक्य रचना बोध - आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती, लाडनूं

२. रचनानुवाद कौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,२०२४.

३. बृहदनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल, मोतीलाल-बनारसीदास, मुम्बई, १९६२.

४. सरल संस्कृत व्याकरण, आचार्य बाबूलाल मीना, हंसा प्रकाशन, जयपुर, २०१२.

DSKT 102 : संस्कृत व्यवहारज्ञान

Credits: 4 | Max Marks: 100 (70+30)

Objectives (उद्देश्य)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है कि विद्यार्थी—

1. संस्कृत भाषा में **धातुओं एवं धातुरूपों** का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करें।
2. प्रमुख **धातुरूपों लट्), लङ्, लृट् आदि(** का अभ्यास कर उनका सही प्रयोग करना सीखें।
3. **नाम एवं सर्वनाम (संज्ञा)** पदों के साथ धातुरूपों का समुचित प्रयोग समझें।
4. संस्कृत वाक्यों में **कर्म)Object)** के प्रयोग एवं सकर्मकअकर्मक धातुओं का भेद जानें।-
5. **कारक(तृतीया से सप्तमी) विभक्तियों-** के प्रयोग द्वारा वाक्यरचना में दक्षता प्राप्त करें।-
6. संस्कृत में **शुद्ध, सरल एवं व्यवहारिक वाक्य निर्माण** की क्षमता विकसित करें।
7. व्याकरणिक ज्ञान को व्यवहार में लाकर **संप्रेषण कौशल** को सुदृढ़ बनाएं।

Course Outcomes (अधिगम परिणाम)

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी—

1. विभिन्न **धातुरूपों** (लट्, लङ्, लृट् आदिका सही रूप पहचान एवं प्रयोग कर सकेंगे।

2. **संज्ञा एवं सर्वनाम** के साथ उचित धातुरूपों का प्रयोग करते हुए शुद्ध वाक्य बना सकेंगे।
3. संस्कृत वाक्यों में **कर्म की पहचान** कर सकेंगे तथा सकर्मक एवं अकर्मक धातुओं में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
4. **तृतीया से सप्तमी विभक्ति** तक के कारकों का प्रसंगानुकूल प्रयोग कर सकेंगे।
5. सरल एवं मध्यम स्तर के **संस्कृत वाक्यों का निर्माण एवं अनुवाद** करने में सक्षम होंगे।
6. संस्कृत भाषा में **व्यवहारिक संप्रेषण (Communication)** की प्रारंभिक क्षमता विकसित करेंगे।
7. दिए गए वाक्यों का **व्याकरणिक विश्लेषण** कर सकेंगे।

UNIT-1 : धातु एवं धातुरूपों के प्रयोग, प्रमुख धातुरूपों का अभ्यास

UNIT-2 :नाम एवं सर्वनाम पदों के साथ धातुरूपों के प्रयोग, शब्दरूपों का अभ्यास

UNIT-3 :संस्कृत वाक्यों में कर्म का प्रयोग, अकर्मक-सकर्मक धातुओं का ज्ञान

UNIT-4 :संस्कृत वाक्यों में अन्य कारोकों का प्रयोग (तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक)

पाठ्य पुस्तकें-

१. संस्कृत वाक्य रचना बोध - आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती, लाडनूं
२. सम्भाषणम्- प्रथम दीक्षा, प्र. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई-दिल्ली।
३. संस्कृतं वदतु, प्र. संस्कृत भारती, नई-दिल्ली।
४. सम्भाषणसोपानम्, जनार्दन हेगडे, प्र. संस्कृत भारती, वेङ्गलूरु।
५. संस्कृत व्यवहार साहस्री, प्र. संस्कृत भारती, वेङ्गलूरु।

DSKT 103 : जैनकाव्यसाहित्य

Credits: 4 | Max Marks: 100 (70+30)

Objectives (उद्देश्य)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है कि विद्यार्थी—

1. जैन काव्य परम्परा का परिचय प्राप्त करें तथा उसकी **विशिष्टताओं** को समझें।
2. **'रत्नपालचरितम्'** (प्रथम एवं द्वितीय सर्गके माध्यम से (जैन आचार, आदर्श एवं कथात्मक शैली का अध्ययन करें।
3. **'अश्रुवीणा'** के चयनित श्लोकों द्वारा भाव, करुणा एवं काव्यसौन्दर्य का अनुभव करें।-
4. **'सम्बोधि'** ग्रंथ के माध्यम से जैन दर्शन एवं नैतिक मूल्यों का बोध प्राप्त करें।
5. काव्य के **रस, अलंकार, भाव एवं शैली** का प्रारंभिक ज्ञान विकसित करें।
6. संस्कृत काव्यसे पाठ के माध्यम- **व्याख्या, अनुवाद एवं भावार्थ** करने की क्षमता विकसित करें।
7. जैन साहित्य के माध्यम से **अहिंसा, संयम एवं नैतिक जीवन मूल्यों** को समझें।

Course Outcomes (अधिगम परिणाम)

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी—

1. जैन काव्य परम्परा एवं उसके प्रमुख ग्रंथों का **मूलभूत परिचय** प्राप्त करेंगे।
2. **'रत्नपालचरितम्'** के प्रसंगों का वर्णन एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
3. **'अश्रुवीणा'** के श्लोकों का **भावार्थ एवं साहित्यिक विश्लेषण** कर सकेंगे।
4. **'सम्बोधि'** के अध्यायों के माध्यम से जैन दर्शन के मूल सिद्धान्तों को समझ पाएंगे।
5. काव्य में निहित **रस, अलंकार एवं भावों** की पहचान कर सकेंगे।
6. संस्कृत काव्य का **अनुवाद, व्याख्या एवं संक्षिप्त आलोचनात्मक विश्लेषण** कर सकेंगे।
7. जैन साहित्य के नैतिक एवं दार्शनिक मूल्यों को **व्यावहारिक जीवन से जोड़ सकेंगे**।

UNIT-1 : **रत्नपालचरितम्** (प्रथम सर्ग)

UNIT-2 : **अश्रुवीणा** (श्लोक 1 से 30 तक)

UNIT-3 : **रत्नपालचरितम्** (द्वितीय सर्ग)

UNIT-4 : **सम्बोधि** (1 से 5 अध्याय)

पाठ्य पुस्तकें-

१. अश्रुवीणा, आचार्य महाप्रज्ञ, सं.डा. हरिशङ्कर पाण्डेय
२. रत्नपालचरितम्, आचार्य महाप्रज्ञ, प्र.जैन विश्वभारती, लाडनूं।
३. सम्बोधि, आचार्य महाप्रज्ञ, प्र.जैन विश्वभारती, लाडनूं।

अथवा

DSKT 104 : संस्कृत साहित्य

Credits: 4 | Max Marks: 100 (70+30)

Course Objectives (उद्देश्य(

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है कि विद्यार्थी—

1. विद्यार्थियों को संस्कृत साहित्य की प्रमुख काव्य परम्परा-एवं उसकी साहित्यिक विशेषताओं से परिचित कराना।
2. रघुवंशम् के द्वितीय सर्ग के माध्यम से आदर्श राजधर्म, नीति एवं काव्यसौन्दर्य का अध्ययन कराना।-
3. मेघदूतम् (पूर्वमेघके माध्यम से विरह (, प्रकृतिचित्रण तथा भावात्मक अभिव्यक्ति की समझ विकसित करना।-
4. ऋतुसंहार के वसन्तवर्णन-द्वारा ऋतु वर्णन के अध्ययन-, अलंकार एवं काव्यसौन्दर्य का ज्ञान प्रदान करना।-
5. वाल्मीकि रामायण के मूल प्रसंगों के माध्यम से भारतीय आदर्शों, नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का बोध कराना।
6. विद्यार्थियों में संस्कृत काव्यपाठ-, व्याख्या, भावार्थ एवं साहित्यिक समीक्षा की क्षमता विकसित करना।
7. संस्कृत साहित्य के माध्यम से भाषासौन्दर्य-, संवेदनशीलता एवं भारतीय सांस्कृतिक चेतना का विकास करना।

Course Outcomes (अधिगम परिणाम)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी—

1. संस्कृत साहित्य की प्रमुख काव्यविशेषताओं को समझ सकेंगे। विधाओं एवं उनकी-
2. महाकवि कालिदास के काव्यों की भाषा, शैली एवं भावसौन्दर्य का विश्लेषण कर सकेंगे।-
3. रघुवंशम् के माध्यम से आदर्श शासन, नीति एवं चरित्रचित्रण का विवेचन कर सकेंगे।-
4. मेघदूतम् में निहित विरहवेदना-, प्रकृतिचित्रण एव-ं काव्यात्मक अभिव्यक्ति को समझ सकेंगे।
5. ऋतुसंहार में वर्णित ऋतुसौन्दर्य एवं अलंकारिक शैली की पहचान कर सकेंगे।-
6. वाल्मीकि रामायण के मूल प्रसंगों से भारतीय संस्कृति, आदर्श जीवनमूल्य एवं नैतिक शिक्षाओं को ग्रहण कर सकेंगे।-
7. संस्कृत गद्यपद्य का सरल अनुवाद-, व्याख्या एवं समीक्षात्मक अध्ययन करने में समर्थ होंगे।

UNIT-1 : **रघुवंशम्** (द्वितीय सर्ग)

UNIT-2 : **मेघदूतम्** (पूर्व मेघ)

UNIT-3 : **ऋतुसंहार** (वसंत वर्णन)

UNIT-4 : **मूल रामायण (प्रथम सर्ग)**

पाठ्य पुस्तकें-

1. रघुवंशम् — सम्पादक सीताराम चतुर्वेदी .पं :, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
2. मेघदूतम् (पूर्वमेघ (— व्याख्यासहित संस्करण, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
3. ऋतुसंहार — सम्पादित संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास चौखम्बा प्रकाशन। /
4. वाल्मीकि रामायण — गीता प्रेस, गोरखपुर ।(मूल पाठ एवं हिन्दी अनुवाद सहित)
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास — चौखम्बा ओरिएण्टालिया, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास — विश्वविद्यालय प्रकाशन।

DSKT 105 : सुभाषित वाङ्मय एवं स्तोत्र साहित्य

Credits: 4 | Max Marks: 100 (70+30)

Objectives (उद्देश्य)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है कि विद्यार्थी—

1. संस्कृत के **सुभाषित साहित्य** एवं **स्तोत्र परम्परा** का परिचय प्राप्त करें।
2. **नीतिशतक (भर्तृहरि)** के माध्यम से नैतिक, सामाजिक एवं दार्शनिक शिक्षाओं को समझें।
3. **भक्तामर स्तोत्र** के माध्यम से भक्ति, श्रद्धा एवं आध्यात्मिक भावों का अनुभव करें।
4. **वीतराग स्तोत्र** के द्वारा जैन दर्शन के वीतरागत्व के सिद्धान्त को समझें। (वैराग्य)
5. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र** के माध्यम से आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का बोध प्राप्त करें।
6. संस्कृत श्लोकों का **पाठ, भावार्थ एवं व्याख्या** करने की क्षमता विकसित करें।
7. सुभाषितों एवं स्तोत्रों के माध्यम से **नैतिकता, आचार एवं जीवनदर्शन-** को आत्मसात् करें।

Course Outcomes (अधिगम परिणाम)

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी—

1. सुभाषित वाङ्मय एवं स्तोत्र साहित्य की **मूलभूत विशेषताओं** को समझ सकेंगे।
2. **नीतिशतक** के श्लोकों का **भावार्थ एवं नैतिक विश्लेषण** कर सकेंगे।
3. **भक्तामर स्तोत्र** के श्लोकों का शुद्ध पाठ एवं अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे।
4. **वीतराग स्तोत्र** के माध्यम से वैराग्य एवं आध्यात्मिक आदर्शों की व्याख्या कर सकेंगे।
5. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र** के श्लोकों का अनुवाद एवं भावार्थ प्रस्तुत कर सकेंगे।
6. संस्कृत श्लोकों में निहित **रस, भाव एवं अलंकारों** की पहचान कर सकेंगे।
7. सुभाषितों एवं स्तोत्रों के नैतिक संदेशों को **व्यावहारिक जीवन में लागू** कर सकेंगे।

UNIT-1 : नीतिशतक - भर्तृहरि (प्रथम ४० श्लोक)

UNIT-2 : भक्तामर स्तोत्र

UNIT-3 : वीतराग स्तोत्र

UNIT-4: कल्याण मन्दिर स्तोत्र

पाठ्य पुस्तकें-

१. नीतिशतक, भर्तृहरि, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
२. भक्तामर स्तोत्र, सं. डा. हरिशंकर पाण्डेय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
३. वीतरग स्तोत्र, प्र. श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभण्डार, अहमदावाद, गुजरात।
४. कल्याण-मन्दिर स्तोत्र, प्र. सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा।